बोध-वाक्य

समानो मंत्रः	(अथर्व वेद ६.६४.२)
समितिः समानी	हे बंधुओं! हमारे विचार
समानं व्रतं	समान हों । हमारी सभा
सहचित्तमेषाम् ।	सबके लिए समान हो । हम
समानेन वो	सबका संकल्प एक समान
हविषा जुहोमि	हो । हम सबका चित्त एक
समानं चेतो	समान भाव से भरा हो । एक
अभिसंविशध्वम् ॥	विचार होकर अपने कार्य में एक मन से लगे । इसीलिए हम सबको समान मौलिक शक्ति मिली है ।

केशवसृष्टि समाचार

मासिक

वर्ष १०, अंक ५ — मूल्य रु. १०/-

मई २००९ — वार्षिक रु. ५०/-

संपादक : महावीर प्रसाद शर्मा

कार्यकारी संपादक : लक्ष्मण गुप्ता, शोभाताई थिटे

संपादक मंडल : विजयालक्ष्मी सामवेदी, सत्यदेव बंका, जगदिश्चंद्र पाटील।

कार्यालय : केशवसृष्टि, उत्तन, भाईंदर, जि. ठाणे.

दूरभाष : २८४५०२४७, २८४५२८५५

यह पत्रिका मुद्रक एवं प्रकाशक सुरेश भगेरिया द्वारा केशवसृष्टि के लिए **युनिटी आर्ट ऑफसेट** ३०२, वडाला उद्योग भवन, वडाला, मुंबई - ३१ से मुद्रित और केशवसृष्टि, उत्तन, भायंदर, जि. ठाणे से प्रकाशित हुई है.

अंतरंग .....

कार्यवाह की कलम से ४

समाचार ५

निरोप समारंभ २००९ .... ६

RRVM Final Exam. Ranks of School 9

कि.गो.रा. वा. के बढ़ते कदम १४

नूतन सरसंघचालक १६

श्रीगुरुजी : दृष्टि और दर्शन १७

संपादकीय

केशवसृष्टि! निरंतर चल रहे विविध समाजोपयोगी प्रकल्पों का अनूठा संगमतीर्थ। कृषी, वनौषधी, शिक्षा, प्रशिक्षण, समाजसेवा आदि विषयोंपर चल रहे प्रकल्प एवं शोधकार्य अपना काम सुचारू रूप से कर रहे हैं।

हालही में केशवसृष्टि में चल रहे रामरत्ना विद्यामंदिर और केशवसृष्टि कृषी तंत्र विद्यालय में वार्षिक परिक्षाएं संपन्न हुई। कृषि तंत्र विद्यालय से प्रतिवर्ष कुल ६० विद्यार्थी कृषि तंत्र का प्रशिक्षण लेकर उतीर्ण होते है। इस वर्ष भी उतने ही विद्यार्थीयों ने परिक्षा दी है, जिनमें लड़कियों की संख्या अधिक है यह विषेश! रामरत्ना विद्यामंदिर से भी कक्षा १०वीं के लिए ७६ और १२वीं के लिए १४ विद्यार्थीयों ने परिक्षा दी है।

केशवसृष्टि में विविध प्रकार के आयोजन होते है। दिनांक २१ अप्रैल से २६ अप्रैल तक केशवसृष्टि में २ ॲडव्हेंचर कैम्प संपन्न हुए। एक ॲडव्हेंचर कैम्प के समारोप हेतु मुंबई महानगर की माननीया महापौर श्रीमती डॉ. शुभा राऊळ के हाथों हुआ। वर्तमान समय में हमें आनेवाली चुनौतियों का सामना करने की शारीरिक और मानसिक क्षमता विकसित करने हेतु ॲडव्हेंचर कैम्प सहाय्यता करते है।

केशवसृष्टि में कार्यरत सभी कार्यकर्ताओं एवं कर्मचारियों के प्रशिक्षण एवं विकास की योजना बनायी गयी है। यहां कार्यरत कार्यकर्ताओं को अपने कार्य के प्रति अधिक सजग एवं अधिकाधिक नेतृत्वक्षम बनाने हेतु रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनी के सहयोग से कार्यकर्ता प्रशिक्षण एवं विकास योजना बनायी गयी है। रामरत्ना विद्यामंदिर में अध्यापन का कार्य कर रहे अध्यापकों को भी विविध विषयों एवं विद्यार्थीयों के मानसशास्त्र का प्रशिक्षण दिया जाता है।

केशवसृष्टि के ईश्वरीय कार्य में आध्यात्मिकता का स्पंदन भरने का काम यहां के मंदिर करते है। दिनांक ९ अप्रैल २००९ को यहां के विद्याप्रद हनुमान मंदिर में 'हनुमान जयंती' हर्षोल्लास के साथ मनायी गई।

दि. १८ अप्रैल २००९ को उत्तन विविधलक्ष्यी शिक्षण संस्था की चिंतन बैठक संपन्न हुई। चिंतन बैठक के मुख्य विषय थे संस्था द्वारा संचालित रामरत्ना विद्यामंदिर का संकल्प, दिशा और संस्कार, नये कार्यकर्ताओं को जोडना, कार्य की विस्तार योजना बनाना, संस्था सक्षमीकरण एवं विकास और रामरत्ना विद्यामंदिर के १२ वर्ष।

समय समय पर नियमित बैठकों, चर्चासत्रों एवं आपसी सहयोग के साथ केशवसृष्टि का कार्य निरंतर अपने दिव्य ध्येय की ओर बढ़ रहा है।

संपादक

कार्यवाह की कलम से...

चुनावों का मायाजाल

गत दो महिनों से पूरा देश चुनावी बुखार से व्याप्त है। जनजागृति का एक अवसर केवल व्यक्तिगत निंदा में खो गया है। आचारसंहिता में खर्च की मर्यादा है, लेकिन अशिष्ट भाषा के प्रयोग पर कोई बंधन नहीं है। अगली पीढ़ी को हम लोकतंत्र का कौनसा संस्कार दे रहे है? वास्तव में आर्थिक मंदी, बेरोजगारी, बढ़ती महंगाई और आतंकवाद जैसे कई गहन प्रश्न आज देश के सामने है। लेकिन इन प्रश्नों पर कोई बहस या चर्चा नहीं हो रही है। एक-दूसरे पर दोषारोप करना और समाज में फूट डालनेवाली बातोंपर अपनी राजनीती चलाना यही दृष्य स्थान स्थान पर देखने को मिल रहा है। चुनावों में पैसे का महत्त्व जिस तेजी से बढ़ रहा है, उतनी ही तेजी से प्रचार की मर्यादाएं भंग हो रही है। अगले चुनावों में प्रचार का स्तर और गिरता जाएगा और लोकतंत्र की धज्जियां उड़ाते हुए नेतागण अपनी मनमानी करेंगे। गत ६० वर्षों के कटु अनुभवों के कारण शिक्षित वर्ग मतदान करने घर के बाहर नहीं निकलता है। लोगों को किस तरह समझाना यही समस्या है।

देश की समस्याएं हल करने की शक्ती और मनोबल किस पार्टी के नेताओं के पास है, यह मुद्दा प्रचार की गडबडी में अनदेखा हो रहा है। राष्ट्रीय भावनाओं से प्रेरित नेता को चुनना हो तो हमारे सामने कौन से पर्याय है? राजनीति का आखाडा कितना भी गंदा क्यों न हुआ हो, उसे अगर साफसुथरा बनाना है तो मतदान करना यह अपना कर्तव्य बन जाता है। शिक्षित और विचारशील व्यक्ति अगर शतप्रतिशत मतदान करें, तो देश का राजनीतिक चित्र निश्चित रूप से बदल सकता है। इसीलिए संघ ने भी देशवासियों को शत प्रतिशत मतदान करने का अनुरोध किया है। राष्ट्रहित के विचार हमारे मन में प्रखरता से आते हैं और ऐसे व्यक्तिसमूह ही अपनी संगठित शक्ती से देश का भविष्य बदल सकते हैं। इसी विश्वास के साथ हम सभी अपना दायित्त्व निभाते रहेंगे, ऐसा मुझे विश्वास है।

केशवसृष्टि में दोनों पाठशालाओं के छात्र छुट्टियां मना रहे हैं। संस्थाओं में अगले वर्ष की तैयारियां हो रही है। एक नया होस्टल बन रहा है। अन्य संस्थाओं की गतिविधियां अपनी गति से बढ़ रही है। आगामी १-२ महिनों में सभी संस्थाओं की वार्षिक सर्वसाधारण सभाएं संपन्न होगी। नए वर्ष की योजनाएं बनेंगी। आप सभी पाठकों से निवेदन है कि केशवसृष्टि के कोई भी एक प्रकल्प के साथ जुड़ जाएं और इस सामाजिक कार्य में अपना सहयोग दें।

केशवसृष्टि के अध्यक्ष मा. श्री. मुकुंदराव चितले जी की धर्मपत्नी का इस माह में दुःखद निधन हुआ। बेटे-बेटियों और रिश्तेदारों से परिपूर्ण परिवार में एक जागृत गृहिणी के नाते सौ. विद्याजी परिचित थी। अपने पति के व्यस्त और सफल जीवन की वह आधारशीला थी। उनके निधन से चितले परिवार पर जो आघात हुआ है, उसे सहन करने में ईश्वर उनकी सहायता करें तथा सौ. विद्याजी की आत्मा को शांति मिलें। ऐसी प्रार्थना हम प्रभुचरणों में करते हैं।

– ***सतीश सिन्नरकर*** – कार्यवाह, केशवसृष्टि ■

केशवसृष्टि में ॲडव्हेंचर कॅम्प

ग्रीष्मकाल प्रारंभ होते ही केशव सृष्टि में विविध प्रकार के शिबिरों का आयोजन होता है।

दि. २१ अप्रैल से २३ अप्रैल तक मुंबई के अमेझिंग ॲडव्हेंचर की ओर से केशवसृष्टि में तीन दिवसीय ॲडव्हेंचर कॅम्प का आयोजन किया गया था। ७ से १४ वर्ष की आयु के लगभग ६२ शिबिरार्थीयों ने सहभाग लिया। शिबिर में प्रशिक्षणार्थीयों को माऊंटेनिंग, रिव्हर क्रॉसिंग, सेल्फ डिफेंस, रायफल शूटिंग, रॅपलिंग और भी अन्य कई प्रकार के साहसी प्रकारों की जानकारी एवं प्रशिक्षण दिया गया। इस शिविर के समारोप हेतु दिनांक २३ अप्रैल २००९ को मुंबई महानगर की महापौर मा. डॉ. शुभा राऊळ ने बच्चों को मौलिक मार्गदर्शन किया।

ॲडव्हेंचर कैम्प की श्रृंखला में दिनांक २४ अप्रैल से २६ अप्रैल तक बोरिवली, मुंबई के अंकुर नेचर क्लब की ओर से ॲडव्हेंचर कैम्प का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों को नेचर ट्रेल, बर्मा ब्रीज, व्हॅली क्रॉसिंग, लॅडर, रॅपलिंग, रायफल शूटिंग, स्नेक शो, आकाश दर्शन, सेल्फ डिफेंस आदी विषयोंपर विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

ऐडवेंचर कैम्प - २००९

रामरत्ना विद्यामंदिर के परिसर में १९ अप्रैल से २५ अप्रैल तक ऐडवैन्चर कैम्प के रूप में व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में ९ वर्ष से १५ वर्ष की आयु वाले भाईंदर, गोरेगाव, मालाड आदि स्थानों से आए छात्रों ने भाग लिया।

सभी शिविरार्थी प्रातः ९ बजे से रात्रि १० बजे तक व्यस्त रहते थे। प्रातःकालीन सत्र में व्यायाम, योग, प्राणायाम, रायफल शूटिंग, ऑब्स्टकल कोर्स, लाठी-काठी, मध्याह्न में विविध विषयों पर प्रबोधन, चर्चासत्र, गोलसेटिंग गेम्स तथा संध्याकालीन सत्र में जलतरण, तलवार-प्रशिक्षण, नानचाकू-प्रशिक्षण, जंगल भ्रमण, आदि विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा शिविरार्थियों के बहुआयामी विकास पर ध्यान दिया गया।

उपर्युक्त विविध कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों की वर्षभर की दिनचर्या से कुछ अलग हटकर शारीरिक, बौद्धिक तथा मानसिक विकास की प्रगति कराने का प्रयास किया गया।

शिविर का आयोजन विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती अनीता साहू के मार्गदर्शन में श्री विजय बुके तथा श्री शहाजी गोफणे द्वारा किया गया।

भूल सुधार

अप्रैल २००९ में प्रकाशित केशव सृष्टि समाचार के अंक में पृष्ठ क्र. १० पर उत्तन कृषि संशोधन संस्था के सलाहगार समिति सदस्य डॉ. अरुण धुरी जी का परिचय प्रकाशित किया गया था। गलती से उनका दायित्व जनरल मॅनेजर-ॲग्री बिझनेस डेव्हलपमेंट ऐसा प्रकाशित हुआ। डॉ. धुरी वर्तमान समय में एक्सेल क्रॉप केअर लिमिटेड में व्हाईस प्रेसिडेंट-रजिस्ट्रेशन एण्ड बिझनेस डेव्हलपमेंट इस पद पर कार्यरत हैं।

हनुमान जयंती

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी ९ अप्रैल को रामरत्ना विद्यामंदिर के परिसर में स्थित विद्याप्रद हनुमान मंदिर में हनुमान जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। ८ अप्रैल को रात्रि १० बजे हवन प्रारंभ हुआ, इस समय श्री सुनील केजरीवाल, पत्नी उषा केजरीवाल के साथ यजमान के रूप में उपस्थित थे। हवन के उपरांत पूरी रात कीर्तन-भजन, हनुमान चालीसा का कार्यक्रम अनवरत होता रहा। पं. कृष्णकांत पांडेय एवं अन्य वैदिक पंडितों ने प्रातःकाल ५ बजे से हनुमान जी का अभिषेक, षोडषोपचार पूजन का कार्य पूर्ण किया। इसके बाद अतिथियों के फलाहार करने के पश्चात् प्रातः १० बजे से श्री वीरेंद्र जी याज्ञनिक ने सरीता जोशी के सहयोग से संगीतमय सुंदरकांड का पाठ प्रारंभ किया। १२ बजे सुंदरकांड के समापन के पश्चात महाआरती एवं महाप्रसाद का आयोजन था। भगवान की सुंदर सज्जा एवं भक्ति तथा भावपूर्ण सुंदरकांड ने भक्तों को विभोर कर दिया।

-विजयलक्ष्मी सामवेदी

केशवसृष्टी कृषी तंत्र विद्यालयातील द्वितीय वर्ष विद्यार्थ्यांचा निरोप समारंभ – २००९

उत्तन कृषि संशोधन संस्था संचालित केशवसृष्टि कृषी तंत्र विद्यालयाची स्थापना २१ जून २००५ रोजी केशवसृष्टि येथे झाली. या विद्यालयाच्या सन २००७-०९ या तिसऱ्या बॅचचे विद्यार्थी कृषि अभ्यासक्रम पूर्ण करून नव्या जीवनाला सामोरे जाण्यापूर्वी या बॅचच्या द्वितीय वर्ष विद्यार्थ्यांचा निरोप समारंभ सोमवार दि. ६.४.०९ रोजी काशीनाथपंत लिमये सभागृहामध्ये संपन्न झाला. या समारंभास सर्वश्री सदानंद सामंत (प्राचार्य) विजय धुळप, सर्व शिक्षकवृंद आणि प्रथम व द्वितीय वर्षाचे विद्यार्थी व विद्यार्थीनी उपस्थित होते. सर्वप्रथम प्रथम वर्ष विद्यार्थ्यांनी प्राचार्यांना व शिक्षकांना पुष्प-गुच्छ देऊन त्यांचे स्वागत केले. त्यानंतर द्वितीय वर्ष विद्यार्थ्यांनी केशवसृष्टि कृषी विद्यालयातील दोन वर्षाच्या कालावधीत अभ्यासलेल्या विषयांवर आणि कॅम्पस मधील वास्तव्याबाबत आपले मनोगत व्यक्त केले. विद्यालयाकडून शेतीविषयक सर्वकष व अनुभवसंपन्न शिक्षण मिळाल्याचे त्यांनी आवर्जुन सांगितले व आपले अनुभव कथन केले.

कृषि शिक्षणासोबतच प्रक्षेत्रातील प्रात्यक्षिके, सांस्कृतिक उपक्रम, विद्यालयातील व वसतीगृहातील शिस्तीचे वातावरण, केशवसृष्टिचा समाजोपयोगी उपक्रमांनी परिपूर्ण झालेला सात्विक व रमणीय परिसर आणि या सर्वांशी निगडीत असलेल्या कडू-गोड आठवणी कायमस्वरूपी मनावर कोरल्या असल्याचे विद्यार्थ्यांनी आपल्या मनोगतात व्यक्त केले. तसचे केशवसृष्टितील गेल्या दोन वर्षाच्या कालावधीत जाणते-अजाणतेपणी घडलेल्या चुकांबद्दल विद्यार्थ्यांनी जाहिर माफी मागितली. या सर्व प्रसंगातून भविष्यातील जीवनात मेहनत करण्याचे व यशस्वी होण्याचे धडे सर्व संबंधितांकडून मिळाल्याचे त्यांनी कबूल केले. आपल्या प्राचार्याप्रती व शिक्षकांप्रती भावना व्यक्त करताना सर्वच विद्यार्थी भावुक झाले. विद्यालय व्यवस्थापनाचे व सर्व शिक्षक वर्गाचे त्यांनी मनःपूर्वक आभार मानले.

कृषि शिक्षणासोबतच प्रक्षेत्रातील प्रात्यक्षिके, सांस्कृतिक उपक्रम, विद्यालयातील व वसतीगृहातील शिस्तीचे वातावरण, केशवसृष्टिचा समाजोपयोगी उपक्रमांनी परिपूर्ण झालेला सात्विक व रमणीय परिसर आणि या सर्वांशी निगडीत असलेल्या कडू–गोड आठवणी कायमस्वरूपी मनावर कोरल्या...

शिक्षकवृंदापैकी सर्वश्री चेतन ठाकूर, माधव माळी, प्रसाद गोसावी, अभय चौधरी व श्री. विजय धुळप यांनी सर्व विद्यार्थ्यांना भावी जीवनासाठी शुभेच्छा दिल्या. विद्यालयाचे प्राचार्य श्री. सदानंद सामंत यांनी सर्व विद्यार्थ्यांना भावपूर्ण निरोप देताना नवीन वाटचालीसाठी त्यांना शुभाशिर्वाद दिले व हा समारंभ निरोपाचा नसून आपले ऋणानुबंध अधिक घट्ट करण्याचा आहे असे नमूद केले. तसेच यापुढे कोणत्याही प्रकारची गरज भासल्यास आपण सदैव तत्पर असल्याचे विद्यार्थ्यांना सांगितले. आपल्या हातून घडलेल्या चुकांची कबुली देण्यासाठी धारिष्ट व मनाचा मोठेपणा असावा लागतो, तो आपल्या विद्यार्थ्यामध्ये असल्याचे पाहून श्री. सामंत भारावून गेले. विद्यार्थ्यांवर केलेल्या संस्काराचे चीज झाल्याचे तसेच आपले सर्व विद्यार्थी आता खऱ्या अर्थाने सक्षम झाल्याचे त्यांनी नमूद केले आणि जीवनाच्या पुढील वाटचालीसाठी मनाने स्वयंसिद्ध झालेल्या आपल्या सर्व विद्यार्थ्यांना त्यांनी शुभेच्छा दिल्या.

यापुढे प्रतिवर्षी २१ जून हा दिवस विद्यालयाचा स्थापना दिन म्हणून साजरा करण्यात येणार असल्याचे व हा दिवस सर्व विद्यार्थ्यांनी आपल्या विद्यालयासाठी राखून ठेवावा असे त्यांनी सर्व विद्यार्थ्यांना सांगितले. या दिवशी सर्व आजी-माजी विद्यार्थ्यांनी विद्यालयात जमून एकत्रितपणे हा स्थापना दिवस आनंदाने व उत्साहाने साजरा करावा आणि आपल्या विद्यालयाशी प्रस्थापित झालेले ऋणानुबंध कायमस्वरूपी जपावेत असे आवाहन केले.

विद्यालयाप्रती कृतज्ञतेचे प्रतिक म्हणून विद्यार्थ्यांनी हिंदूस्थान युनिलीवर कंपनीचा प्यूअर इट वॉटर प्यूरीफायर विद्यालयाला भेट दिला त्याचा प्राचार्यांनी स्वीकार केला. त्यानंतर समारंभाचा समारोप करण्यात आला व विद्यार्थी. शिक्षक आणि कर्मचारी यांनी एकत्र भोजन करून समारंभाची भावपूर्ण सांगता केली.

Ram Ratna Vidya Mandir -Centre for AIEEE-2009

Ram Ratna Vidya Mandir was deputed for the first time as the centre for the highly prestigious All India Engineering /Architecture Entrance Examination (AIEEE-2009), which is a competitive exam of national importance. It was held on 26th April, 2009, Sunday from 9.30 a.m. to 12.30 p.m. (Duration 3 Hrs).

There were around 400 candidates along with their guardians in the Keshav Srushti Campus. They were welcomed and given adequate guidance and were also provided with refreshments in Keshav Srushti itself.

The school also made it a point for the traveling convenience of the students with the support from the Mira- Bhayander Transport Authorities, who provided bus facility for the required candidates and their guardians from Bhayander Station upto Ram Ratna Vidya Mandir Bus Stop.

Extra care was taken to provide a congenial atmosphere to the students. The examination was conducted smoothly with the systematic seating arrangements, proper information about the class and floor number and a co-operative team of teaching, non- teaching staff and the resident Doctor with guidance of the Principal, Mrs.Anita Sahu who was also the Centre Superintendent and the Academic Head Mr. Bhushan Upasani - the Deputy Superintendent, for any assistance required by the students.

This was a golden opportunity for the school to put forth the magnanimity (landscape. infrastructure and hospitality.) of the school to the people coming from all over Maharashtra and that too in large numbers.

Overall the examination was a great success. This was possible due to an excellent team-work of the Keshav Srushti and the RRVM staff with maximum support from Shri Abhay Phansekar (CEO, Keshav Srushti).

Sabita Shinde
The Department of English

RRVM bids adieu to its board students

Farewell party for class 12th students was arranged on 24th March at 5.30 pm in the school assembly hall. The function was attended by the Principal, Academic Head the teachers and also the parents of these students.

The entire programme was beautifully organized by the 11th class students who endeavoured for the décor, the cuisine and the entertainment within three days and with excellent result.

Compeered by Mst Dikesh Gaghda and Mst. Himanshu Agarwal (FMM students) the function had it all from a soulful song to rocking dance numbers. Students spoke their hearts out and even the teachers in their speeches made it a point to advice and bless the students for a bright future.

The best wishes of the Chairman, Shri Mahendra Kabra, Vice Chairman Shri Arvind Rege and other members of School Managing committee was conveyed by the principal, Mrs. Anita Sahu, who also revised the school's vision through the students so that they never forget the objective with which they had their schooling completed. The function ended with a Good dinner and pleasantries Similarly a get together was arranged for class 10th students on 30th March.

ASSET Workshop for teachers

A workshop on post ASSET examination was conducted by the Education Initiative group Pvt. Ltd. on 19th April at 8.30 am in th School Conference Hall. Attended by all the teachers the session was an enlightening one as the ASSET result analysis of RRVM students was discussed. This helped the teachers in understanding the students' weaknesses and their strengths in each area of different subjects. The session was indeed a fruitful one as the teachers now know which skills of the students have to be honed.

Another mile stone crossed

Financial Markets Management (FMM) students of Ram Ratna Vidya Mandir qualified National Stock Exchange's Certificate of Financial Markets (NCFM) Exam: A Beginners' Module. On 13th April they appeared and scored good percentage. Students like Himanshu Agarwal scored 86 %, Pawan Lakhani 77 %, Dikesh Ghaghda 75% and Dhruval Savla 59% in the first attempt. Principal Didi congratulated for their success.

They also visited Indiabulls Security in Colaba. They need to complete another two modules of NCFM i.e Capital Market (Dealers) Module and Derivatives Market (Dealers) Module by Feb., 2010. RRVM successfully completed its 1st Year of FMM Course.

By: Commerce Team.

Visit to ICAI BHAWAN

On 20th April, 2009, Ram Ratna Vidya Mandir students of 11th Commerce along with their teacher Ms.Anagha Prabhu visited Western India Regional Council of the Institute of Chartered Accountants of India, ICAI Bhawan at Colaba, Mumbai. The Institute of Chartered Accountants of India (ICAI) is the premier professional accounting body of the country since 1949.The Institute has its headquarters in New Delhi & five regional councils located in Mumbai, Chennai, Kolkata, Kanpur, New Delhi. As a part of responsibility to regulate the profession of C.A., the institute enrolls students for entrance test, practical training and monitor their training.

Keeping up the landmark made last year by enrolling students of 11th Commerce, this year too we were planning to enroll our eleven students for CPT.

This was the first time that students were taken directly at ICAI for registration purpose.

CPT classes on weekly basis have already started for these students. It's an added advantage for the student as now they are learning General Economics, Mercantile Law, Fundamentals of accounting, and Quantitative Aptitude with the supporting material from the Institute.

Ms.Anagha Prabhu
The Commerce Department

EDUCATION FAIR

The Times Of India group had organized Education Fair from 24th to 26th April, 2009 at Bandra -Kurla Complex, Mumbai. This was posed as the largest Education Fair in India according to the organizers. There were only three schools who participated of which RRVM was one. The other participants were from different courses like Fashion Designing, Interior designing, etc.

The people who visited our school's stall were greatly impressed by the Management especially the integrated course of IIT Rao Academy(KOTA).Most of the visitors shared interest in taking admissions in the 11th and 12th with IIT integrated courses. They were convinced with the cost, set up and planning of the school.

Many visitors also enquired about the admission for classes 4th to 10th. On the whole it was a good platform for the school to bring about the awareness of our esteemed institution among the people of Mumbai.

Ms. Pervinder Kaur, Science Department.

Extra classes for 10th and 12th students

Keeping with the tradition of the school this year too we have class 10th and class 12th students attending extra classes in the summer vacation so that the students would have an ease in completing their portion beforehand and thereby have ample time for practicing and solving board papers.

The classes are regularly conducted from 8 am to 1.15 pm with lectures of one hour duration. After lunch and a nap the students again prepare for self study which is supervised by teachers. This ensures that whatever is completed in the class the same is worked upon in the hostel as well, so that we have optimum utilization of this one month.

उत्तन विविधलक्ष्यी शिक्षण संस्था

चिंतन बैठक १८ अप्रैल २००९

उत्तन विविधलक्ष्यी शिक्षण संस्था की चिंतन बैठक दि. १८ अप्रैल २००९ को रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनी में संपन्न हुई। केशवसृष्टि के संरक्षक सदस्य श्री रामेश्वरलालजी काबरा चिंतन बैठक के प्रमुख अतिथी थे।

बैठक में मुख्य रूप में ५ विषयों पर चर्चा की गयी।

१. रामरत्ना विद्यामंदिर संकल्प दिशा और संस्कार, २. रामरत्ना विद्यामंदिर के १२ सफल वर्ष, ३. नये समर्पित कार्यकर्ताओं को कार्य में जोड़ना, ४. विस्तार योजना, ५. संस्था सक्षमीकरण एवं विकास

चिंतन बैठक हेतु उत्तन विविधलक्ष्यी शिक्षण संस्था एवं विद्यालय प्रबंधन समिति के कुल १८ सदस्य उपस्थित थे।

RAM RATNA VIDYA MANDIR
FINAL EXAMINATION RANKERS OF SCHOOL - 2008-09

First Rank | **Second Rank** | **Third Rank**

Urnil Gosar
96.73%
Class -IV

Vikas Parmar
81.20%
Class -IV

Smit Bhadiyadra
81%
Class -IV

First Rank | **Second Rank** | **Third Rank**

Dhairya Lodha
93.95%
Class - V

Saurabh Sharma
93.40%
Class - V

Rakshit Jivani
91.15%
Class - V

First Rank | **Second Rank** | **Third Rank**

Saurabh Jain
91.57%
Class - VIA

Anand Deb Banerjee
91.80%
Class - VIA

Shubham Bal
83.07%
Class - VIA

First Rank | **Second Rank** | **Third Rank**

Sumit Rawal
92.75%
Class - VIB

Shivkumar Iyer
89.18%
Class - VIB

Sahil Vaishnawa
86.82%
Class - VIB

First Rank | **Second Rank** | **Third Rank**

Akshat Jain
95%
Class - VIIA

Kaushik Shenoy
94.29%
Class - VIIA

Vipin Verma
90.86%
Class - VIIA

First Rank | **Second Rank** | **Third Rank**

Rishabh Singh
88.32%
Class - VIIB

Yash Didwania
83.50%
Class - VIIB

Vatsal Shah
82.21%
Class - VIIB

First Rank | **Second Rank** | **Third Rank**

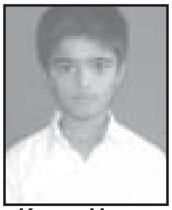

Karan Vyas
91.82%
Class - VIIC

Akash Haria
90.71%
Class - VIIC

Akshay Yeola
84.43%
Class - VIIC

First Rank | **Second Rank** | **Third Rank**

Sharad Agarwal
94.96%
Class - VIIIA

Sameer Shah
93.32%
Class - VIIIA

Sujay Sadhani
88.57%
Class - VIIIA

RAM RATNA VIDYA MANDIR
FINAL EXAMINATION RANKERS OF SCHOOL - 2008-09

First Rank	Second Rank	Third Rank
Yash Marwah 92.64% Class - VIIIB	**Vishal Darak** 87.71% Class - VIIIB	**Parth Gala** 83.96% Class - VIIIB

First Rank	Second Rank	Third Rank
	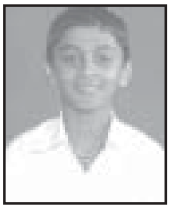	
Anoop Solanki 93.04% Class - VIIIC	**Yash Maheshwari** 92.54% Class - VIIIC	**Jenil Monpara** 90.04% Class - VIIIC

First Rank	Second Rank	Third Rank
	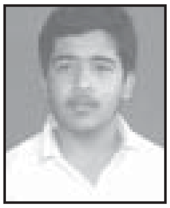	
Shivam Maroo 87.54% Class - IXA	**Aman Agarwal** 85.17% Class - IXA	**Sunil Sihag** 82.75% Class - IXA

First Rank	Second Rank	Third Rank
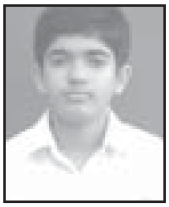	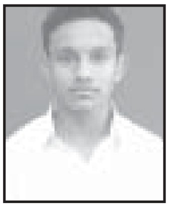	
Mihir Jaywant 87.58% Class - IXB	**Dhanesh Shah** 86.42% Class - IXB	**Ronit Sawant** 80.04% Class - IXB

First Rank	Second Rank	Third Rank
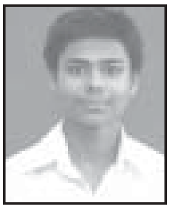		
Vishal Lodha 89.79% Class - IXC	**Siddharth Bal** 87.42% Class - IXC	**Vaibhav Lukhi** 86.71% Class - IXC

First Rank	Second Rank	Third Rank
Abhishek Kanani 83.4% Class - XI SCI	**Apurva Mishara** 75.1% Class - XI SCI	**Sonu Porwal** 64.8% Class - XI SCI

First Rank	Second Rank	Third Rank
	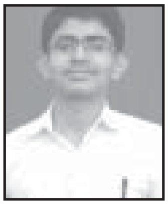	
Vikram Jain 86.75% Class - XI COM	**Kunal Rajpurohit** 86.5% Class - XI COM	**Vishwas Surana** 81.65% Class - XI COM

First Rank	Second Rank
Himanshu Agarwal 79.05% Class - XI FMM	**Pawan Lakhani** 67% Class - XI FMM

RAM RATNA VIDYA MANDIR
FINAL EXAMINATION RANKERS OF SCHOOL - 2008-09

OVERALL

First Rank

URNIL GOSAR
96.73%
Class - VIIA

Second Rank

AKSHAT JAIN
95%
Class - VIIA

Second Rank

SHARAD AGARWAL
94.96%
Class - VIIIA

Congratulation to All the Students...!

सच्चाई का फल

रामू नाम का एक लकड़हारा था। वह बहुत गरीब किंतु ईमानदार था। प्रतिदिन जंगल से लकड़ी काटकर उन्हें बाजार में बेचता तथा उनसे प्राप्त पैसों से अपने परिवार का पालन पोषण करता था। अपनी मेहनत की कमाई से वह संतुष्ट था।

एक दिन वह नदी के किनारे स्थित पेड़ पर लकड़ी काट रहा था कि अचानक उसके हाथ से कुल्हाड़ी छूट गई और नदी में गिर गई। उसके पास दूसरी कल्हाड़ी खरीदने के लिए पैसे नहीं थे। अब उसे अपने परिवार के पालन की चिन्ता हुई। वह दुःखी होकर नदी के किनारे बैठकर रोने लगा। उसे रोता हुआ देखकर जलदेवता को दया आ गयी। जलदेवता ने ब्राह्मण के रूप में प्रकट होकर उससे रोने का कारण पूछा। रामू ने सारी बात जलदेवता को बता दी।

जलदेवता ने कहा – ''रोओ मत। मैं अभी तुम्हारी कुल्हाड़ी निकाल देता हूँ।'' ऐसा कहकर उन्होंने पानी में डुबकी लगाई और एक सोने की कुल्हाड़ी लेकर बाहर आये। कुल्हाड़ी को देखकर रामू ने कहा – ''यह तो सोने की है, मेरी कुल्हाड़ी सोने की नहीं है।'' जलदेवता ने दुबारा पानी में डुबकी लगाई। अब की बार उनके साथ में चांदी की कुल्हाड़ी थी। उसे देखकर रामू ने कहा – ''महाराज! यह कुल्हाड़ी भी मेरी नहीं है। मेरी तो साधारण लोहे की है।''

देवता ने तीसरी बार पुनः डुबकी लगाकर रामू को लोहे की कुल्हाड़ी लाकर दी। अपनी कुल्हाड़ी देखकर रामू प्रसन्न हो गया। कुल्हाड़ी लेकर उसने जलदेवता को धन्यवाद दिया। रामू की सच्चाई व निर्लोभ आचरण से प्रसन्न होकर जलदेवता ने सोने व चांदी की कुल्हाड़ी भी उसे देदी। तीनों कुल्हाड़ी पाकर रामू बहुत प्रसन्न हुआ।

बाल मित्रों! इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें हमेशा सच बोलना चाहिए एवं लालच नहीं करना चाहिए।

औषधीय गुणों से भरपूर है नीम

नीम को चमत्कारिक वृक्ष माना जाता है। इसकी ठण्डी छाया गर्मी से राहत देती है तो पत्ते, फल-फूल, छाल का उपयोग घरेलू रोगों में किया जाता है। नीम के औषधी गुणों को घरेलू नुस्खों के रूप में उपयोग कर स्वस्थ व निरोगी बना जा सकता है -

✻ चैत्र माह में नौ दिनों तक प्रातःकाल नीम की कोमल पत्तियों में काली मिर्च, हींग, सेंधा या काला नमक, जीरा व अजवायन मिलाकर बारीक पीस कर खाली पेट लें। इस प्रयोग से व्यक्ति वर्षभर रक्त दोष से मुक्त रहता है।

✻ नीम के पत्तों को पानी में उबालें, ठंडा होने पर इससे बाल धोएं, स्नान करें। कुछ दिनों तक प्रयोग करने से बाल झड़ने बंद हो जाएंगे व बाल काले व मजबूत रहेंगे।

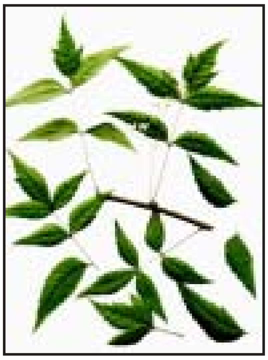

✻ गर्मियों में लू लग जाने पर नीम के बारीक पंचांग (फूल, फल, पत्तियां, छाल एवं जड़) चूर्ण को पानी मिलाकर पीने से लू का प्रभाव शांत हो जाता है।

✻ नीम की छाल के काढ़े में धनिया और सौंठ का चूर्ण मिलकर पीने से मलेरिया रोग में जल्दी लाभ होता है।

✻ नीम की दातून करने से दांत व मसूढ़े मजबूत होते हैं और दांतों में कीड़ा नहीं लगता है।

✻ बिच्छु के काटने पर नीम के पत्ते मसल कर काटे स्थान पर लगाने से जलन नहीं होती है और जहर का असर कम हो जाता है।

✻ नीम के पत्ते जलाकर रात को धुंआ करने से मच्छर नष्ट हो जाते हैं और विषम ज्वर (मलेरिया) से बचाव होता है।

✻ नीम की निम्बोली का चूर्ण बनाकर एक दोन ग्राम रात को गुनगुने पानी से लें। कुछ दिनों तक नियमित प्रयोग करने से कब्ज रोग नहीं होता है एवं आंतें मजबूत बनती हैं।

✻ नीम के २५ ग्राम तेल में थोड़ा सा कपूर मिलकर रखें। यह तेल फोड़ा-फूंसी, घावों आदि में उपयोगी रहता है।

ॐ

केशवसृष्टी गोशाला

केशवसृष्टी गोशाला में पधारें, गोमाता की सेवा करें, गोवंश के सहवास में मानसिक शांति एवं अलौकिक आनंद प्राप्त करें। यह शास्त्र संमत मान्यता है कि गाय की सेवा करने से पुण्य की प्राप्ति होती है।

निम्नलिखित विविध प्रकार के दान करके आप गोशाला के आधारस्तंभ बन सकते है।

- एक दिन के यजमान रू. ११,०००/- (गोशाला का एक दिन का व्यय वहन करना।)
- एक समय गोशाला की सभी गायों को पंचखाद्य लड्डू खिलाना रू. ११००/-
- मासिक गोग्रास दान रू. ११००/-
- सवत्स गोदान (अधिक जानकारी के लिए गोशाला कार्यालय में संपर्क करें)

गोसेवा में सदैव, आपके कृपाभिलाषी

गोसेवा परिषद

प्रमुख कार्यालय :
३६, फिरोजा मैन्शन, दूसरा माला, ग्रान्ट रोड पूर्व स्टेशन के सामने,
ग्रान्ट रोड, मुंबई- ४०० ००७.
दूरभाष : २३०९ ४३०६, ३०९१ ७३५०, फैक्स : २३०९ ६०२७

गोशाला :
केशवसृष्टी गोशाला, उत्तन गाँव, गोराई रोड,
भाईन्दर पश्चिम, पिन कोड : ४०११०६ जिला ठाणे, महाराष्ट्र.
दूरभाष : २८४५ १०३१, २८४५ ०२५३

|| गवा ग्रासप्रदानेन स्वर्गलोके महीयते ||

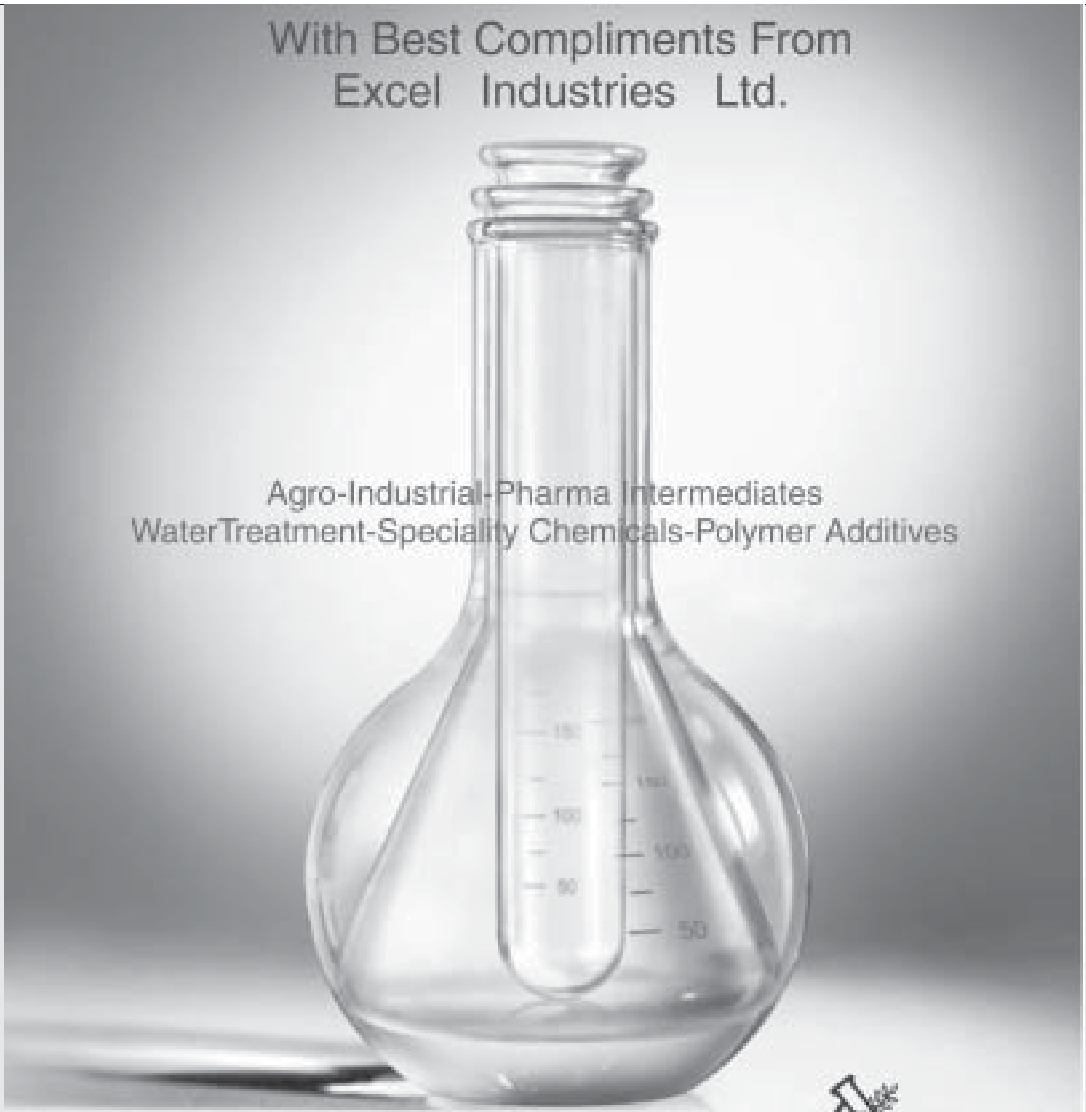

Promise Of Excellence
That Excel Has Always Delivered Upon

Unfaltering quality, fully integrated production systems linked to process technology, innovation, expertise & faster market introductions make us the preferred partner for our clients around the world. By providing solutions that are critical for market leadership, we share a vision to be the world's most trusted Chemical Company.

184-87, S.V.Road,
Jogeshwari (W)
Mumbai 400 102, INDIA
Tel: + 91 22 66464200
Fax:+ 91 22 26783508
Email:
excelmumbai@excelind.com
Website : www.excelind.co.in

किसन गोपाल राजपुरिया वानप्रस्थाश्रम के बढ़ते कदम

किसन गोपाल राजपुरिया वानप्रस्थाश्रम हमरे हिंदू धर्म के अनुसार जब व्यक्ती अपनी ५० वर्ष की आयु पुरी करके वानप्रस्थाश्रम की आयु में प्रवेश करता है। तब उसके शरीर के अंग बराबर कार्य नहीं करते उस समय मनुष्य को ज्ञात होता है कि इस शरीर को छोड़कर चलना पड़ेगा लेकिन पिछले समय में जाने या अनजाने में जो भी बूरे कार्य किये है उसका फल हमको भुगतना पड़ेगा और इस से बचने के लिए हमको क्या करना चाहिए? इससे बचने का एक ही रास्ता है - भगवान की भक्ती लेकिन भगवान की भक्ती करने के लिए हमको एकान्त स्थान चाहिए और इन सभी समस्या का समाधान किसन गोपाल राजपुरिया वानप्रस्थाश्रम में है। हमको यहां सुंदर वातावरण और भगवत भजन एवं ध्यान के लिए शिवालय और स्वस्थ संबंधी समस्याओं का समाधान के लिए क्लीनक सुविधा आप को प्रदान की जाती है। हमारे आश्रम परिसर में वानप्रस्थीयों को भगवत भजन करने के उदेश्य से अपने पिताजी के स्मरण के लिए एवं अपनी मां से प्रेरणा पाकरके श्री वालेश्वर शिवध्यान केंद्र के निर्माता संजय अग्रवालजी अपने पिता जी के पुण्यतिथी पर सभी निवासियों को स्नेहभोजन करा और अपने पुरे परिवार के साथ आकरके आश्रम के सभी निवासियों को अपने करमकलों से परोसकर खीलाया दि. १२-४-०९ को आइ. के. गुप्ता जी अपने प्यारे मित्र कैलाश अग्रवाल जी की प्रेरणा से हमारे आश्रम के निवासियों को स्नेहभोजन प्रदान किया इस प्रकार से इस महीने में कुलन चार स्नेहभोजन का कार्यक्रम हुआ और निवासी भी उन सभी स्नेहभोजन करानेवालो को ईश्वर से प्रार्थना कि की उनके परिवार को ईश्वर कुशल मंगल में रखें। आज कल की युवा पीढ़ी अवनती की तरफ जा रही है। लेकिन हमको अपने आश्रम में ३ अप्रैल और १४ अप्रैल के दिन देखने को मिला की आज की युवा समाज भी अपने धर्म कर्म एवं वृद्ध व्यक्तियों कि सलाहों को मानता है और उसका अनुसरण करता है। इन्स्टिट्यूट ऑफ एअर हॉस्टेस ट्रेनिंग के लगभग १४ बच्चे आये और निवासियों के साथ इस प्रकार से दो दिन का समय बिताया और उसके वातों का समर्थन करते हुए कहा की ओल्ड इज गोल्ड इंग्लीश शब्द से उनको परिभाषित करते हुए कहा कि आज से हम मानते है की वृद्ध व्यक्ती हमारे समाज के रत है। उनके बतये हुए मार्ग पर चलना चाहिए समाज की समस्या को इस प्रकार के युवकों द्वारा हल हो जाने से संतुष्ट निवासी फिर आपने भाजच भाव के कार्य में लग गये इस प्रकार से प्रत्येक १५ दिन पर सत्संग कि दृष्टी से आनेवाले भक्ती वेदान्त के आध्यात्मिक विभाग के प्रमुख श्री राधदास जी आ गये। दिनांक १५-०४०९ को उनके मुखार वृन्द से भवगान के नाम का १०८ बार जप करके फिर भगवान कि भक्ती किस प्रकार से करनी चाहिए इस का उदाहरण उन्होंने श्री मारूती नंदनहनुमान जी को बताया कि हमारी भक्ती काम, क्रोध, मद लोभ इनको त्याग कर करना चाहिए सभी कार्य भगवान को समर्पित करके करना चाहिए और उन्होंने बताया कि कलयुग में भक्ती भी बहुत सरल कर के ईश्वर ने केवल नाम जप करने तक सीमित कर दिया हिंदू धर्म का लोक प्रिता गंध के रचैता गोस्वामी तुलसी दास जी ने अपने मानस में लिखा है।

कलयुग केवल नाम अधार।
सुमीरी-सुग्रीरी नर उतरीही पारा।

ऐसा सरल भक्ती का मार्ग बताया और उन्होंने बताया कि यदि कोई भक्त भाव, अभाव, स्वर, आलस्या आदी के वसी भुत हो करके भी हमारा नाम लेता है तो हम उसक उद्धार कर देते है।

ईश्वर प्राप्ती का एक अटुक मार्ग : वानप्रस्थाश्रम

मनुष्य का जन्म होने के पश्चात उसकी आयु निरंतर कम होती जाती है। लेकिन मनुष्य अपनी शारीरिक वृद्धि देखकर प्रसन्न होता है। परंतु जब उसकी आयु ६० वर्ष की होती है, तब उसके शरीर के अंग शिथील हो जाते है। उस समय उसको ज्ञात होता है कि अब हमारा अंत समय नजदीक आ रहा है। फिर भी जो मनुष्य माया के वशिभूत हो करके अपने जीवन को सफल बनाने के लिए ईश्वर की भक्ती नहीं करता वह मृत्यु के बाद घोर यातन कि प्राप्ती होती है। हर मनुष्य को चाहिए की अपनी गृहस्थाश्रम की आयु जुटि करने के पश्चात वानप्रस्थाश्रम स्वीकार करना चाहिए और अपने इस मानव शरीर के माध्यम से मोक्ष की प्राप्ती कर सके। गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि-

बड़े भाग्य मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सब गंध ही गावा॥

यह मनुष्य की शरीर देवताओं को भी दुर्लभ है। यदि हम इस शरीर का उपयोग अपने लक्ष्य की --- में न लगाकर इस का गलत उयोग करते हैं। तो हमारा जीवन नष्ट होने के बाद हमको चौराशी लाख योनियों में फिर भटकना पड़ता है। जब हम ईश्वर से बहुत प्रार्थना करते है, तब हमको यह मनुष्य का शरीर प्राप्त होता है। जीव को मनुष्य का शरीर मिलता है। उसके उद्धार के लिए लेकिन यदि जीव अपने इस शरीर का उपयोग पशु जैसे कार्य करने में लगाता है। तो उसको अंत में पछताना पड़ता है। लेकिन जब मनुष्य अपना ५० वर्ष का जीवन काल व्यथा में व्यतीत किया हो तो भी उसके अभी समय है कि अपने वानप्रस्थाश्रम की आयु को भोग वासनाओं में न लगाकर ईश्वर की प्राप्त के लिए लगाये यह समय व्यतीत करने का नहीं होता उस समय का उपयोग केवल ईश्वर प्राप्ती के लिए करना चाहिए। ***पं. सूर्यमणि शुक्ला***

उत्तन वनौषधी संशोधन संस्था के बहुपयोगी उत्पाद

शतावरी

नाम -संस्कृत - शतावरी हिंदी -सतावर, मराठी - शतावरी, latin Name - Aspangus racemosus कुल Lilliaceae

यह कष्टकयुत झाडीदार लता होती है। कॉटेवक होते है। पत्र - छोटे छोटे होते है। पुष्प - गुच्छ बद्ध, सुगंधित होते है। फल-मटर के आकार के, पकने पर लालरंग होते है।

वर्षा के प्रारंभ में इसके मूल से नयी शाखाएं निकलती है।

रस - मधुर, तिक्त

विपाक - मधुर

वीर्य - शीत

वातपितहरी वृष्या - स्वादुतिक्जा शतावरी

महती चैव क्षधाच मेघ्वाउग्निबलवर्धिनी सुसू अ ४६

शतावरी मधुर तिला गुरु, वन्य वृष्य रसायन है। तथा हृछ, मेथ्य, अक्तिवर्धक, बलवर्धक है।

शतावरी गुरु शीला तिक्ता स्वाही रसायनी

मेघग्निपुष्टिदा स्निग्धा नेत्र्या जुल्मातिलारजित॥

भावप्रकाश

शतावरी वातपित्तशामक है। इससे सिद्ध तैल शिरोरोग, वातव्याधि, तथा बैर्बल्य में उपयुक्त है। क्षयरोग तथा बैबीद्ध में उपयुक्त है। आंखों के लिए हितकर है। जुल्म अतिसार में उपयुक्त है। वीर्यवर्धक है तथा सूतिकावस्था में दुग्धवृद्धि करता है।

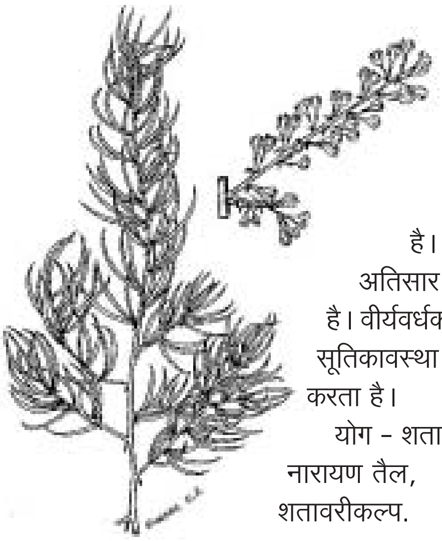

योग - शतावरीहृत, नारायण तैल, शतावरीकल्प.

केशवसृष्टी वनौषधि केंद्र

अपने केंद्र द्वारा निर्मित आयुर्वेदिक उत्पादनों का निरंतर प्रयोग करें। जिवनभर उत्तम स्वाथ्य का तथा आनंदमय जीवन का सुखभोग करें। इन उत्पादनों में प्रयोग की हुई अनेक काष्ठ्य औषधियों का उत्पादन भी अपने प्रकल्प में प्राकृतिक खाद् द्वारा किया जाता है।

विविध उत्पादनों की सूची

उत्तन वासाकुमारी सिरप
उत्तन रुदन्ती सिरप
उत्तन प्राश
उत्तन जास्वंद तैल
उत्तन ब्राम्ही-आँवला केश तैल
उत्तन रुमालीन तैल
उत्तन श्रवण तैल
ॲलोव्हेरा जैल
ॲलोव्हेरा क्रीम
त्रिफला चूर्ण
सितोपलादि चूर्ण
तालिसादि चूर्ण
हर्बोमाल्ट-एसव्ही
हर्बो-टी
डाईजिसॉल्ट

अधिक जानकारी के लिए हमे संपर्क करें।

उत्तन वनौषधी संशोधन संस्था

केशवसृष्टी, उत्तन गाँव, गोराई रोड, भाईन्दर पश्चिम,
पिन कोड : ४०११०६ जिला ठाणे, महाराष्ट्र.
दूरभाष : २८४५ ०७२०

आर्तानाम् दु:खनाशनम्

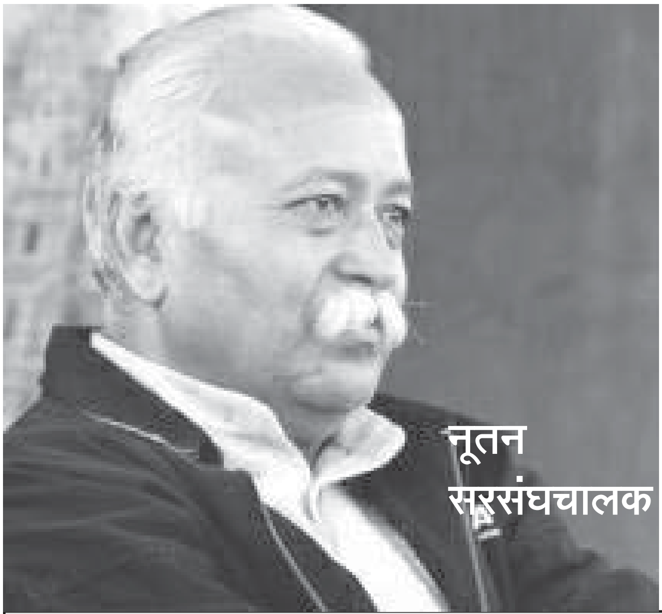

अखिल भारतीय कार्यकारिणी

प. पू. सरसंघचालक	:	श्री मोहनराव भागवत
मा. सरकार्यवाह	:	श्री सुरेश उपाख्य भैय्याजी जोशी
मा. सहसरकार्यवाह	:	श्री सुरेश सोनी
मा. सह सरकार्यवाह	:	श्री दत्तात्रय होसबले
प्रचारक प्रमुख	:	श्री मदनदास जी
सह प्रचारक प्रमुख	:	श्री श्रीकृष्ण मोतलग
शारीरिक प्रमुख	:	श्री के. सी. कण्णन
सह शारीरिक प्रमुख	:	श्री जगदीश जी
सह शारीरिक प्रमुख	:	श्री अनिल ओक
बौद्धिक प्रमुख	:	श्री भागय्या जी
सह बौद्धिक प्रमुख	:	श्री महावीर जी
सेवा प्रमुख	:	श्री सीताराम जी
सह सेवा प्रमुख	:	श्री सुहास हिरेमठ
संपर्क प्रमुख	:	श्री हस्तीमल जी
प्रचार प्रमुख	:	श्री मनमोहनजी वैद्य
व्यवस्था प्रमुख	:	श्री साकलचंद बागरेचा
सहव्यवस्था प्रमुख	:	श्री बालकृष्ण त्रिपाठी

सदस्य : सर्वश्री इंद्रेशजी, मधुभाई कुलकर्णी, शंकरलालजी, श्रीकांतजी जोशी, राम माधव, दिनेशजी, लक्ष्मणराव पार्डीकर, वन्नीयराजन जी, पर्वतरावजी, डॉ. अशोक कुकडे, श्रीकृष्णजी माहेश्वरी, पुरुषोत्तम परांजपे जी, डॉ. बजरंगलाल जी, डॉ. दर्शनलाल जी, सिद्धानाथ जी, ज्योतिर्मय जी चक्रवर्ती, माणिक दास, शशिकांत चौथाईवाले, मुकुंदराव पणशीकर, ईश्वरचंद्र गुप्त।

निमंत्रित : सर्वश्री सुरेशराव केतकर, कृष्णप्पा जी, जयदेवजी, सुरेंद्र सिंह जी चौहान, ओमप्रकाश जी, दर्शनलाल जी, राघवेंद्र कुलकर्णी।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नूतन सरसंघचालक श्री मोहनराव जी भागवत की तीन पीढ़ियां संघ कार्य को समर्पित रही हैं। आपके दादा नारायण राव भागवत नागपुर में डॉ. हेडगेवार जी के सहपाठी थे। संघ स्थापना के बाद जब डॉक्टरजी ने चंद्रपुर में संघ कार्य आरंभ किया तब नारायण राव पहले स्वयंसेवक बने थे। मोहनराव जी के पिता मधुकर राव भागवत डॉ. हेडगेवार जी के समय ही प्रचारक बन गये थे। १९४० से १९५० तक वे गुजरात के प्रांत प्रचारक रहे।

तीन भाइयों एवं एक बहिन में सबसे बड़े श्री मोहनराव जी का जन्म चंद्रपुर में श्रावण अमावस्या (११ सितंबर १९५०) को हुआ था। चंद्रपुर में प्रारंभिक शिक्षा के पश्चात् आपकी आगे की स्कूली शिक्षा नागपुर में हुई। १९७१ में अकोला के पंजाब राव कृषि विद्यापीठ से पशु चिकित्सा विज्ञान में स्नातक (बी.वी.एस.सी.) की उपाधि उन्होंने प्राप्त की। स्नातकोत्तर अंतिम वर्ष के छात्र रहते हुए ही मोहनराव जी ९ दिसंबर १९७४ में प्रचारक बने। १९७५ में देश में आपातकाल लागू हो गया। वे भूमिगत रहते हुए संघ कार्य करते रहे। आपातकाल के पश्चात मोहनराव जी अकोला के जिलाप्रचारक नियुक्त हुए। १९८० में वे नागपुर के प्रचारक बने और कुछ समय पश्चात् पूरे विदर्भ के प्रांत प्रचारक बनाये गये। १९९४ में अखिल भारतीय शारीरिक प्रमुख के साथ-साथ उत्तर पूर्व क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रचारक का दायित्व उन्हें मिला। १९९९ से अखिल भारतीय प्रचारक प्रमुख रहते हुए श्री मोहनराव जी ने विदेश विभाग का काम भी देखा। इस कार्य हेतु अफ्रीका, इग्लैंड तथा अन्य देशों का प्रवास भी किया। २००० में वे सरकार्यवाह चुने गए। तब से अब तक वे इसी दायित्व का वहन करते रहे थे।

सरसंघचालक का दायित्व संभालने के पश्चात् उन्होंने संघ के तीसरे सरसंघचालक बाला साहब देवरस के शब्दों को दोहराते हुए कहा कि ''राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की वास्तविक शक्ति उसके देवदुर्लभ कार्यकर्ता गण हैं।''

श्री गुरुजी : दृष्टि और दर्शन

हम कौन? हमारी राष्ट्रीयता

पश्चिम में राष्ट्र् कल्पना का अभाव

पश्चिम में 'राष्ट्र' की कल्पना का प्रारंभ में आविर्भाव इस प्रकार हुआ। सर्वप्रथम विविध जनसमुदायों ने अपने-आपको किसी प्रकार की प्रादेशिक सीमाओं के अंतर्गत मर्यादित कर लिया। किसी विशिष्ट प्रदेश में रहनेवाले जनों में यह भावना उदय हुई कि वे उस भूमि के पुत्र हैं , उनकी अपनी एक जीवन-पद्धति है , जिसको उन्हें सुरक्षित रखना है तथा उनके स्वार्थ इसी प्रकार के अन्य जनसमुदायों से भिन्न हैं । संक्षेप में, उनका एक अलग एवं विशिष्ट अस्तित्व है । इस प्रकार वे एक सुगठित एवं अविभाज्य समुदाय बन गए । समय-समयपर और विभिन्न देशों में विचारवान अग्रणी पुरुषों ने इन समुदायों का परिचय देने के लिए 'राष्ट्र' की भावना को अभिव्यक्त किया है। यदि हम उनके द्वारा की गई अनेक अभिव्यक्तियाँ एवं परिभाषाएं संकलित करके उनका सार निकालें तो हमें कुछ निश्चित एवं सरल निष्कर्ष प्राप्त होते हैं।

किसी राष्ट्र के लिए प्रथम अपरिहार्य वस्तु एक भूखंड है, जो यथासंभव किन्हीं प्राकृतिक सीमाओं से आबद्ध हो तथा एक राष्ट्र के रहने और वृद्धि एवं समृद्धि के लिए आधार रूप में काम दे। द्वितीय आवश्यकता है उस विशिष्ट भू-प्रदेश में रहनेवाला समाज, जो उसके प्रति मातृभूमि के रूप में पूज्यभाव विकसित करता है तथा अपने पोषण, सुरक्षा और समृद्धि के स्थान के रूप में उसे ग्रहण करता है। संक्षेप में, वह समाज उस भूमि के पुत्र-रूप में स्वयं को अनुभव करे।

समान परंपरा – महत्त्वाकांक्षा युक्त

यह समाज केवळ मनुष्यों का एक समुच्चय ही नहीं होना चाहिए; विजातीय व्यक्तियों का किसी स्थान पर एकत्रिकरण मात्र नहीं चाहिए; उनके जीवन की एक विशिष्ट पद्धति बनी होनी चाहिए, जिसको जीवन के आदर्श संस्कृति, अनुभूतियों, भावनाओं, विश्वास एवं परंपराओं के सम्मिलन के द्वारा एक स्वरूप दिया गया हो । इस प्रकार जब समाज समान परंपराओं एवं महत्त्वाकांक्षाओं से युक्त, अतीत के जीवन की सुख-दुःख की समान स्मृतियों और शत्रु-मित्र की समान अनुभूतियों वाला तथा जिनके सभी हित संग्रथित होकर एकरूप हो गए हैं, इस सुव्यवस्थित रूप में संगठित हो जाता है, तब इस प्रकार के लोग उस विशिष्ट प्रदेश में पुत्र के रूप में निवास करते हुए एक राष्ट्र कहे जाते हैं।

हिंदू–भारत की संतान

यदि हम अपने देश पर संसार के सभी विद्वानों द्वारा मानी हुई यह परिभाषा लागू करें तो हम देखेंगे कि हमारा महान देश उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण महासागर तक तथा उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में फैली हुई हिमालय की शाखाओं एवं उनके अंतर्गत भू-प्रदेशों से युक्त तथा अपने दक्षिण महासागर स्थित द्वीपसमूह के साथ एक महान नैसर्गिक इकाई है। हमारा सुविकसित समाज यहां इस भूमि की संतान के रूप में सहस्रों वर्षों से निवास कर रहा है। यह समाज विशेषतया आधुनिक काल में हिंदू-समाज के नाम से जाना गया है, क्योंकि वे हिंदू-समाज के ही पूर्वज थे, जिन्होंने मातृ-भू के लिए प्रेम तथा भक्ति के आदर्श एवं परंपराएं निश्चित कीं। उन्होंने अपनी मातृभू की सजीव एवं अखंड प्रतिमा को समाज के मस्तिष्क में सदैव उज्ज्वल बनाए रखने हेतु तथा उसकी दिव्य सत्ता के प्रति भक्ति जागृत रखने हेतु विविध कर्तव्यों और कृत्यों को भी निर्दिष्ट किया। वे ही थे, जिन्होंने इस मातृभू की अखंडता एवं पावित्र्य की रक्षा के लिए अपने रक्त को बहाया। यह सब कुछ केवल हिंदू ही इस भूमि की संतान के रूप में यहां रहता आया है। अति प्राचीनकाल से आज तक के हमारे सभी महान-पुरुषों-अपने अपने जीवन एवं उदाहरणों द्वारा इस पावन संबंध सूत्र के सातत्य को पुष्ट किया है।

मातृ- भू की इस संयुक्त उपासना ने हमारे संपूर्ण समाज में कश्मीर से कन्याकुमारी तक एवं वनवासी से नगरवासी तक एक-दूसरे के प्रति एक रक्त-संबंध स्थापित किया । ये सभी

हमारी राष्ट्रीयता की कल्पना क्या है ? पहले हम , जिस प्रकार इसकी कल्पना आधुनिक संसार में समझी और व्यवहार में लाई जाती है, इसे निर्देशित करें और उसका विश्लेषण करें । यह वर्तमान संदर्भ में विषय के विवेचन में सहायक होगी ।

जातियाँ, ईश्वर की उपासना के विविध मार्ग तथा विविध भाषाएँ एक महान सजातीय ठोस हिंदू-समाज की अभिव्यक्तियाँ हैं, जो इस मातृभूमि की संतान हैं।

सांस्कृतिक पैतृकदाय

हमारे हिंदू-समाज का एक आदर्श रहा है और वह है चरम सत्य की अनुभूति। इसी आदर्श के अनुरूप हमारा एक धर्म है, जो अपने दृष्टिकोण की व्यापकता में अतुलनीय है तथा मानव-जीवन के सभी स्तरों एवं पहलुओं को आवेष्टित करता है। हमारी एक जीवनधारा है, जिसे हम 'संस्कृति' कहते हैं। जो अति उदात्त गुण-पवित्रता, चारित्र्य, धैर्य एवं आत्मबलिदान की भावना को व्यक्ति-व्यक्ति के हृदय में निविष्ट कराती हुई उसे मानव सत्ता के उच्चतम लक्ष्य को प्राप्त करने की योग्यता प्रदान करती है। ऐहिक को एक अलौकिकता प्रदान करती हुई इस संस्कृति की छाप हमारे दैनिक जीवन में व्यक्त होती है। उदाहरण के लिए- हमारा यह सामान्य नियम है कि प्रत्येक स्त्री को चाहे वह छोटी बालिका ही क्यों न हो, हम 'माँ' कहकर पुकारते हैं। हम अपनी अनेक बोलियों में भी जो शब्द प्रयोग करते हैं , वह भी इस अर्थ को व्यक्त करते हैं। इसका यह आशय है कि पत्नी को छोड़कर अन्य प्रत्येक स्त्री, वह चाहे जिस अवस्था एवं प्रतिष्ठा की हो, पुरुष के लिए माता का व्यक्त रूप है। यह हमारी संस्कृतिका विशिष्ट स्वरूप है।

शिवाजी का प्रसिद्ध उदाहरण है कि उन्होंने कल्याण के मुसलमान सूबेदार की सुंदरी पुत्र-वधू को नाना प्रकार के उपहारों के साथ अत्यंत सम्मानपूर्वक लौटा दिया था। यद्यपि यह बात विदेशी, विशेषतया मुसलमान इतिहासकारों को अपवादस्वरूप प्रतीत होती है, परंतु इस देश की उदात्त संस्कृति के प्रतीकस्वरूप एक अति साधारण उदाहरण है। यहाँ का सामान्य जन तक इसका भागीदार है।

समान सुखद -दु ख:द अनुभव

इन सहस्रों वर्षों में हमने असंख्य संत-महात्माओं, शूरवीरों एवं ऐसे उद्धारकों की एक दीप्तिमयी परंपरा को उत्पन्न किया है, जिन्होंने परमात्मा की खोज के मार्ग पर हमारा नेतृत्व किया है और भौतिक संपत्ति तथा सम्मान के अर्जन में हमारा मार्गदर्शन किया है। विविध प्रकार के व्यक्तियों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उन्होंने एक समाज-व्यवस्था को जन्म दिया, संपत्ति के योग्य उत्पादन एवं वितरण के लिए आर्थिक पद्धतियों का विकास किया तथा व्यवस्थित सामाजिक विकास की धारणा एवं रक्षा हेतु राजनैतिक संस्थाओं का निर्माण किया। यहाँ इन अनेक शताब्दियों के हमारे अस्तित्व के परिणामस्वरूप हमें वैभव एवं विपत्ति तथा मित्र एवं शत्रु की अनुभूतियाँ समान भाव से हुई हैं, जिनके कारण हमारे सभी हित अपृथक रूप से एक साथ मिल गए हैं।

जब कभी गलती से हम परस्पर लड़े और यह विचार किया कि एक विशेष वर्ग

के हित, दूसरे वर्ग के हितों के विरुद्ध हैं तथा परस्पर विरोधी राज्यों का विकास किया, तब-तब हम विदेशियों के विरुद्ध युद्ध में पराजित हुए और हीन दासता एवं दैन्य को प्राप्त हुए। यही परिणाम उस समय भी रहा, जब हमारे समाज का एक भाग किसी विदेशी शक्ति के विरोध में रहा तथा दूसरे भाग ने उसी विदेशी शक्ति को भूल से मित्र समझा। पृथ्वीराज चौहान का उदाहरण इसी प्रकार का है। उसका शत्रु मुहम्मद गोरी था। जयचंद ने मुहम्मद गोरी से मित्रता स्थापित की। यहाँ पर हमारे देश के दो प्रमुख व्यक्तियों में से एक उसी आक्रांता का शत्रु तथा दूसरा मित्र बना। परिणाम यह हुआ कि पृथ्वीराज पराजित हुआ और मारा गया। पर जयचंद भी नष्ट हुआ और मुहम्मद गोरी राजा हुआ। फलत: एक के पश्चात् दूसरी विपत्तियाँ, जिन्हें हम आठ सौ वर्षों से भोग रहे हैं एवं वर्तमान काल में हमारे देश के विभाजन के रूप में पराकाष्ठा पर पहुँच गई हैं, हमारे ऊपर छाने लगीं।

इसके विपरीत चाहे अल्पकाल के लिए ही क्यों न हो, जब कभी हमने यह अनुभव किया कि हमारे हित अविभक्त हैं, हमारे मित्र एवं शत्रु सभी के लिए समान हैं , तब-तब हमारे राष्ट्र जीवन में ऐसी महत् शक्ति का उद्भव हुआ कि विदेशी शक्ति चूर-चूर होकर हमारे पैरों पर लोटने लगी।

संक्षेप

एक पूर्ण राष्ट्र के निर्माण के लिए सभी आवश्यक तत्त्वों की पूर्ति इस प्रकार इस महान हिंदू-समाज के जीवन में हो जाती है। इसलिए हम कहते हैं कि हमारे इस भारत देश में हिंदू-समाज का जीवन ही राष्ट्रजीवन है। संक्षेप में यह कि यह 'हिंदू-राष्ट्र' है।

साभार - श्री गुरुजी दृष्टी और दर्शन